देवताओंकी उपासना : खण्ड ३

श्रीराम

(अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन एवं उपासना)

भूमिका

अधिकांश लोगोंको देवतासे सम्बन्धित जो थोडा ज्ञान रहता है, वह बचपनमें पढी अथवा सुनी कहानियोंद्वारा होता है । इस अल्प ज्ञानके कारण देवतापर विश्वास भी अल्प ही रहता है । देवतासे सम्बन्धित अधिक ज्ञान प्राप्त होनेपर अधिक विश्वास निर्माण होनेमें सहायता मिलती है । विश्वासका रूपान्तर आगे श्रद्धामें होता है, जिससे देवताकी उपासना एवं साधना भी उचित ढंगसे हो पाती है । इस दृष्टिकोणसे इस लघुग्रन्थमें श्रीरामसे सम्बन्धित प्रायः अन्यत्र न पाया जानेवाला उपयुक्त अध्यात्म-शास्त्रीय ज्ञान देनेपर विशेष ध्यान दिया है । श्रीरामके विषय में विस्तृत विवेचन सनातनके ग्रन्थ 'श्रीविष्णु, श्रीराम एवं श्रीकृष्ण'में दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि यह लघुग्रन्थ पढकर प्रत्येक व्यक्तिको अधिकाधिक साधनाकी प्रेरणा मिले । – **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

॥	**श्रीरामसे सम्बन्धित विवेचनका महत्त्व**	६
॥	**भूमिका**	७
१.	रामायण	८
२.	श्रीरामके कुछ नामोंका उद्‌गम	१०
३.	रामपरिवार एवं अवतार	११
४.	विशेषताएं	१२
५.	रामायणके कुछ नामोंका भावार्थ	१७
६.	रामायणके कुछ प्रसंगोंका भावार्थ	२१
७.	सनातन-निर्मित श्रीरामका 'सात्त्विक चित्र' एवं 'नामजप-पट्टी'	२८
८.	श्रीरामकी उपासना	३१
९.	हमारे जीवनमें रामायण	४६